# दाक्षायणी

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 105

# दाक्षायणी

*तेलुगु मूल*

**आर.वी.यस. सुन्दरम**

*अनुवाद*

**सी. पद्मावती**

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2014

**Srinivasa Bala Bharati -**
***(Children Series)***

DAKSHAYANI

Telugu Version
**R.V.S. Sundaram**

Translator
**C. Padmavathy**

Editor-in-Chief
**Prof. Ravva Sri Hari**

T.T.D. Religious Publications Series No.
©All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies :

Price :

Published by
**M.G. GOPAL,** I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

# प्राक्कथन

बच्चों का हृदय सुमनों की भांति निर्मल होता हैं। उत्तम कपूर से बढ़ कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिर काल तक आदर्श जीवन बिताने के लिए सुस्थिर नींव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं। इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए हमारी विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक हे।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बालभारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य के बच्चों तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे तथा परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे हैं। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

'श्रीनिवास बालभारती' की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो.एस.बी. रघुनाथाचार्य आभिनंदनीय हैं।

इस प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

# प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.वी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्धेश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

**आर. श्रीहरि**
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्

# दाक्षायणी

दाक्षायणी का अर्थ है दक्षप्रजापति की पुत्रिका। इसका द्वितीय नाम सतीदेवी है। कहा जाता है कि दक्ष का जन्म स्वायंभुव मन्वन्तर में ब्रह्म के दक्षिण-हस्त के अंगुष्ठ से हुआ था। इसकी पत्नी प्रसूति स्वायंभुव मनु की पुत्री है। प्रसूति की पुत्री सतीदेवी है।

संस्कृत के पुराणों में बहु संदर्भों में दक्ष की कथा वर्णित है। महाभारत, शिवपुराण, विष्णुपुराण, वायुपुराण आदि ग्रंथों में दक्ष की प्रस्तावना है। इसकी पुत्रिकाओं की संख्या कहीं चौबीस कही गयी है तो कहीं पचास और साठ है। ये दक्ष की पुत्रिकाँए होने से सब को भी दाक्षायणी कहना समुचित है। परंतु जिस सतीदेवी ने परमेश्वर से विवाह किया था वही दाक्षायणी नाम से रूढ हो गयी। सतीदेवी ने दक्ष के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दी थी और पुनः हिमवन्त की पुत्री पार्वती के नाम से प्रसिद्ध हो गयी। इसे भी दाक्षायणी कहते हैं।

## सतीदेवी का जन्म

इसके जन्म के बारे में एक मत नहीं है। हर पुराण में भिन्न है। इस का सही विवरण 'शिवमहापुराण' में प्राप्त होता है। इस ग्रंथ से सही रूप में यह विदित होता है कि यह दाक्षायणी सतीदेवी का रूप प्राप्त करती है।

एक बार ब्रह्मा अपनी ही पुत्री सन्ध्या देवी से अनुरक्त हो गया था जिस से महेश्वर घृणा करने लगा। उसने ब्रह्मा की निंदा की। ब्रह्म ने भी स्थिर संकल्प किया कि परमेश्वर में भी प्रेम का स्वाद पैदा करें। ब्रह्मा अपने प्रयत्नों में असफल हुआ। अंत में विष्णु ने एक उपाय बताया। इस उपदेश के अनुसार ब्रह्मा ने शक्ति की स्तुति कर

उसे प्रसन्न किया। शक्ति ने प्रत्यक्ष होकर कहा कि मैं दक्ष की पुत्रिका के रूप में जन्म लेकर शिव से विवाह करूँगी।

## दक्ष की तपस्या

ब्रह्मा के आदेश से दक्ष कई सालों तक तपस्या करने लगा। तपस्या के समय वह कुछ काल तक पवन भक्षण करता कुछ समय निराहार हो, कुछ काल तक जल-सेवन मात्र करता और कुछ काल तक पत्र-भक्षण मात्र करता रहा। इस प्रकार देवी के बारे में तप करने पर वह प्रत्यक्ष होकर बोली कि ''तुम कौन सा वर चाहते हो ?''

दक्ष ने कहा - ''हे जगन्माते, रुद्र की पत्नी होने की योग्यता तुम्हे छोडकर और किसी को नहीं है। अतः तुम्हें पृथ्वी पर जन्म लेकर रुद्र से विवाह करना चाहिए। शिव को मोहित करने में तुम्हीं प्रबल शक्ति हो। तुम मेरी पुत्री बनो और हर की पत्नी बनो। मेरा यह वर अपने लिए ही नहीं परंतु सारी जगत् का श्रेय करेगा''-

## देवी का आदेश

दक्ष को देवी ने उसकी पुत्री के रूप में अवतरण करने का वर तो दिया। साथ ही यह सूचना भी कि यदि तुम कभी मेरा अपमान करोगे तो उसी क्षण अपने शरीर को भस्म कर दूँगी''- इस प्रकार भविष्य की सूचना देवी ने की।

## दक्ष की पुत्रिकाएँ

दक्ष तपस्या से लौट आने के बाद वीरणमुनि की पुत्री असिक्नि से विवाह किया। उसके द्वारा उसकी साठ पुत्रिकाएँ हुईं। उन में से दस पुत्रिकाओं का विवाह धर्मऋषि से किया। तेरहों का कश्यप से



किया और सत्ताईस का चन्द्र के साथ किया। अन्य चारों का विवाह क्रमशः भूतमुनि, अंगिरस, कृशाश्व और गरुड से किया था। कुछ का कथन है कि सतीदेवी दक्ष की प्रथम-पुत्री है, कुछ का कहना है वह दक्ष की मध्य-पुत्री और कुछ मानते हैं कि वह सब से कनिष्ठ पुत्री है। इस प्रकार साठ कन्याओं का विवाह संपन्न करने के बाद दक्ष और एक पुत्री के लिए देवी का ध्यान किया। दक्ष की स्तुति से प्रसन्न देवी उस की पुत्री दाक्षायणी के रूप में अवतरित हुई। उस जन्म के समय आकाश से पुष्प-वृष्टि हुई और देवताओं ने दुंदुभि बजायी।

दक्ष की पुत्री सतीदेवी शिव की अर्धनारी ही है। लिंग और माया-इन दोनों के संबंध से अर्धनारीश्वर का रूप उद्भव हुआ। अर्धनारीश्वर ने ब्रह्मा की सृष्टि की है। ब्रह्म ने अर्धनारीश्वर से प्रार्थना की कि उसके शरीर के दो भाग किए जाय। उसकी प्रार्थना को शिव ने अंगीकार किया। उसी देवी ने दाक्षायणी का रूप धारण किया। यह कथा लिंग-पुराण के अंतर्गत है।

## दाक्षायणी का बाल्य

सौंदर्य, शील, विनय और तेजस्विता से शोभायमान पुत्री को दक्ष ने 'सती' का नाम दिया। जब वह गोद की बच्ची थी तभी से अपनी महत्ता प्रकट करने लगी। देवी के जन्मते ही दक्ष ने उसकी स्तुति की । शिशु-रूपा देवी अपनी माता के सुने बिना दक्ष से बोली - ''ऋषि श्रेष्ठ दक्ष,तुम ने जिस लक्ष्य से मेरी आराधना की है वह पूरा हुआ है।''- इन बातों को सुनाकर वह फिर शिशु बनकर माता की गोद में लेट गयी और रोने लगी।

दाक्षायणी दिनों दिन प्रवर्धमान होते हुए माता-पिता की दुलार से चंद्र की षोडश कलाओं की तरह बढने लगी। जब वह अपनी सहेलिनियों से खेलती थी तब भी परमेश्वर का चित्र खींचती रहती थी। खेल-कूदों में भी स्थाणु, हरहर, उग्ररूपी रुद्र आदि शंकर के नामों को दुहराती थी। बाल्य से ही अपने माता-पिता वीरिणि और दक्ष के प्रति अपार श्रद्धा-भक्ति थी। इस तरह वह उनकी दुलारी लाल हो गयी।

## तुम्हारा पति महादेव है

एक दिन दक्षप्रजापति के पास बैठी हुई इस नारी रत्न के मंगल-रूप को ब्रह्मा और नारदों ने देखा। सतीदेवी भी उन्हें देख नमस्कार कर खडी हो गयी। उसकी नम्रता देखकर उन दोनो महात्माओं ने आशीर्वाद दिया - ''हे सतीदेवी तुम जिस से प्रेम करती हो वह जगत-पति सर्वज्ञ है। हे मंगलांगी, जिस अतुल सौंदर्यवान ने किसी को पत्नी के रूप में नहीं स्वीकार किया वही तुम्हारा पति होगा'' - दक्ष ने यह दुआ सुनकर चिंता रहित हो गया कि मेरी पुत्री साक्षात् परमेश्वरी है।

## सतीदेवी का विवाह

परमेश्वर का अर्ध-भाग बनने के लिए ही सतीदेवी का जन्म हुआ था। किसी कथा के अनुसार दक्ष ने उसके जन्म के पहले ही परमेश्वर से वर पाया था कि महादेवी को अनुग्रह करके उस के साथ महादेव का विवाह होना चाहिए। उसकी प्रार्थना इस प्रकार थी- ''हे देवाधीश, मैने समस्त पदार्थ-प्राप्त करने के लिए इस पवित्र नारी को अपनी भक्ति से प्रसन्न किया था। विश्व सृष्टि का कारक

आप हैं तो करण मैं हूँ। अतः वाणींद्र अमरेंद्र, इस पावन नारी रत्न के संगम से (सृष्टि की) कार्य-सिद्धि हो जाय ''-

**(कुमारसंभव काव्य-१-७२)**

उसकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर भक्तानुरक्त परमेश्वर ने नारीरत्न सतीदेवी का पाणि-ग्रहण किया और दक्ष को यह भी वर दिया कि तुम चार प्रकार के भूतसमूह के सृष्टिकर्ता बनो।

दक्ष की पुत्री यौवनावस्था में पहूँची तो उस सौंदर्यवती कन्या को देखकर दक्ष सोचने लगा कि इस का परमेश्वर से किस तरह

विवाह किया जाय। सतीदेवी भी अपनी माता की अनुमति से शम्भु को प्राप्त करने के लिए नित्य आराधना करती थी। प्रत्येक मास में उस मास के उचित व्रत-पूजा आदि करने लगी। इस से ईश्वर भी संतुष्ट होता था। जिस दिन से उसने शिव का अपना पति होने की पूजा आदि प्रारंभ की थी, उसी दिन ब्रह्मा और विष्णु अपनी पत्नियों के साथ शंकर के दर्शन के लिए गए।

## उचित कन्या के मिलने से विवाह करूँगा

उन दोनों को अपनी पत्नियों के साथ आना देखकर महेश्वर ने उनका स्वागत सत्कार किया और उचित आसनों पर बिठाया। जब परमेश्वर ने उन दोनों दम्पतियों को देखा तो उसके मन में भी विवाह करने की इच्छा हुई। फिर भी उसने प्रश्न किया - "हे ब्रह्मा और विष्णो आप के इधर आने का कारण क्या है? सच बताइए''

ब्रह्मा ने धीरे धीरे अपने आने का कारण बताया - ''हे परमेश्वर एक ही सत्य-स्वरूप के हम तीनों ने सृष्टि के भिन्न कार्यों के निर्वाह के लिए भिन्न रूप धारण किए हैं। इसी प्रकार माया ने भी विविध कार्यों के लिए लक्ष्मी, सरस्वती, सावित्री और सन्ध्या का रूप धारण किया है। तुम भी हमारी तरह एक सुंदरी से विवाह करो'' ब्रह्मा की बातें सुनकर महेश्वर अनभिज्ञ की भाँति बोला कि योग्य वधू मिलने पर अवश्य करूँगा-क्या कहीं ऐसी वधु है, जो मेरे योग के समय वह भी योग में रहें और जब श्रृंगार में आसक्त हो जाऊँ तो मुझे सम्मोहित कर सकें। ऐसी उन्नत वधू है तो बताओ।''



## तप का फल सिद्ध हुआ

ब्रह्मा ने सतीदेवी के बारे में परमेश्वर से कहा। ''हे महादेव, तुम जिन गुणों से युक्त वधू को चाहते हो वह दक्ष ब्रह्म की पुत्री सतीदेवी है। तुम्हें पति पाने के लिए वह भी तप करती है। तुम्हारे प्रति उस सती का प्रेम है या नहीं इसे तुम ही जान लो । '' परमेश्वर ने इन बातों को मान लिया। अपने लिए अहरहर ध्यान करनेवाली सतीदेवी के समक्ष प्रत्यक्ष हो गया। स्फटिक सदृश देहकाँति से शोभित शंकर के समक्ष मृदुल काजल जैसी सतीदेवी चंद्र के सामने मेघ समूह की भाँति प्रकाशमान थी। परमेश्वर ने सतीदेवी से कहा कि मेरे साथ विवाह करोगी। सतीदेवी ने जवाब दिया कि मेरे पिता से यह विषय प्रस्तावित करके विवाह कर सकते हैं। परमेश्वर कैलास जाकर इसी विचार में रहा और मन में सोचते ही ब्रह्मा वहाँ आ पहूँचा। उसने ब्रह्मा को प्रजापति के पास भेजा। इधर सतीदेवी भी अपने तप के सफल होने की बात अपनी सखियों द्वारा अपने माता-पिता से कहलवाई। यह बात सुनकर वीरणि और दक्ष अपने लक्ष्य पूरा होने के उपलक्ष्य में वैभव से उत्सव मनाने लगे और अपनी पुत्री के सौभाग्य की सराहना भी।

## दक्ष का भय

दक्ष के मन में शंका होने लगी कि परमेश्वर सतीदेवी से प्रसन्न हो प्रत्यक्ष तो हुआ; परंतु मुझ से कहे बिना लौट गए हैं। वह इस से विवाह करने आयेगा या नहीं! कुछ भी हो परमेश्वर के पास किसी को भेजने का निश्चय किया। उसके मन में कई प्रकार के

विचार उठने लगे कि कहीं परमेश्वर असम्मत हों तो हमारे प्रयत्न भग्न हो जायेंगे। अंतिम निर्णय यह किया कि अपनी पत्नी के साथ शिव की उपासना करके शिव को प्रसन्न करें और वह स्वयं आकर विवाह करने सिद्ध हो जाय।

इतने में ब्रह्मा शिव का दूत बनकर आया। उसने पूछा कि सतीदेवी का विवाह शिव से करना चाहिए। दक्ष की आकांक्षा पूरी हुई। ब्रह्मा ने शिव के पास जाकर दक्ष का उद्देश्य बताया - ''मैं अपनी पुत्री का विवाह शिव के साथ करूँगा। उसका जन्म इसीलिए हुआ है। यह सगाई मेरे लिए मान्य है। मेरी पुत्री ने भी शिव की अपने पति के रूप में उपासना की है। इस प्रस्ताव में शिव मेरी सम्मति चाहता है तो मुझे और क्या चाहिए''-

## ब्रह्मा का विरूप होना

इन बातों के बाद सती और परमेश्वर का विवाह बहुत वैभव से संपन्न हो गया। विवाह के संदर्भ में एक घटना घटी। विष्णु ने शंकर से कहा कि ''हे शंकर इस सतीदेवी के सौंदर्य को देखकर या उसके बारे में सुनकर जो वासना ग्रस्त होता है, उस का संहार करो'' शिव ने कहा कि ऐसा ही होगा। शिव की माया से ब्रह्मा मोहित हो गया। जब सतीदेवी अग्नि की परिक्रमा कर रही थी तब उसकी साडी थोडी सी हट जाने से उसके सुंदर पाद-द्वय देखकर ब्रह्मा के मन में विकार पैदा हुआ। तत्क्षण शिव अपनी त्रिशूल से ब्रह्मा का अंत करने उद्यत् हुए। बहुत कोलाहल मच गया। सबने मिलकर शिव को शाँत किया। इस दोष के लिए शिव ने ब्रह्मा को विरूप कर दिया।



## सती और परमेश्वर का विहार

शंकर ने दाक्षायणी से विवाह करने के बाद बृहत नंदिकेश्वर पर उसे बिठाया। लताकुंजों से शोभित हिमालय पर्वत के पास गया। ब्रह्मा विष्णु आदि इन से बिदा लेकर अपने स्वस्थान चले गए। देव गण, सिद्ध-समूह, यक्ष, गन्धर्व आदि भी आनंद से शिव से बिदा लेकर चले गए। परमेश्वर कैलास पहूँचकर नंदि से उतरा। नंदि और अपने गणों से कहा कि मैं जब मन में तुम्हें चाहता हूँ तब आ जाओ। सब से बिदा लेकर शिव सतीदेवी से एकान्त में गया।

कवियों ने सती-शिव के दाम्पत्य जीवन का सुन्दर वर्णन किया है। शिव कभी सुंदर-पुष्पों से हार बनाकर उस से सतीदेवी को अलंकृत करता था। सतीदेवी अपनी मुहँ आइने में देखती है तो वह भी अपना मुँह उस से सटाकर देखता। कभी कभी सती के कुण्डलों को हिलाता और उन्हें निकालकर फिर कानों में पहना देता। सती के अरुण पादों को मेहंदी से और भी लल्लौह करता था। कभी अचानक अंतर्धान होता उसी क्षण प्रकट होकर उससे आलिंगन करता। कभी मनोहर पद्मों से उसे अलंकृत करता। परस्पर संभाषण आदि से दोनों ऐसे एक-रूप होते थे जैसे समाधि में स्थित योगी अपने ध्येय में एकाकार हो जाता हो। नन्नेचोड नामक तेलुगु के कवि ने उनकी श्रृंगार-लीलाओं का बहुत उत्तम वर्णन किया है।

## गजानन का जन्म

इसके जन्म के बारे में जो प्रचलित कथा है उसके अनुसार पार्वति अपने नहाते समय उपयोग करनेवाली आटा से गजानन पैदा हुआ है। लिंग-पुराण की कथा के अनुसार देव-गण असुरों से रक्षा

करने की प्रार्थना शिव से करते हैं; शिव ही पार्वती के गर्भ में गणेश का रूप धारण किया है।

'कुमारसंभव' काव्य में नन्नेचोड ने विचित्र कथा रची है जो तमिल-साहित्य में प्रचलित है। एक दिन सती-परमेश्वर विहार करते समय गार्दभों के मैथुन को देखा। शिव-शक्तियों ने गज का रूप धारण करके संभोग किया और गजानन का जन्म हुआ।

## दक्ष का अपमानित होना

अब तक सतीदेवी की जो कथा-क्रम है, वह नयी मोड ले चलती है। दक्ष-पुत्री सतीदेवी परमेश्वर से विवाह करके सुख-जीवन बिताती रहती है। उसके जीवन में कालांतर में संभवित घटनाँए उसे महान् पतिव्रता सिद्ध करती हैं। पति-भक्त परायिणी अपने पिता के सामने आत्मत्याग कर चुकी जिस से सतीदेवी भारत की साध्वियों के लिए आदर्श मान हो गयी।

## दक्ष का क्रोध

प्रयाग क्षेत्र में एक बार भारी यज्ञ हुआ था। वहाँ ऋषि-मुनि-गण, नवब्रह्म, देवगण, वेदवेत्ता और ज्ञानी लोग आए थे। इस याग में शिव भी आया था। आए हुए सब ने शिव की स्तुति की और शिव की अनुमति से बैठ गए। उसी समय दक्ष भी वहाँ आ पहूँचा। सब ने उसको नमस्कार किया। परंतु शिव अपने आसन से उठा तक नहीं। दक्ष क्रोध से बोला - ''यह शिव भूत प्रेतादियों में बडा घमंडी है। इस रुद्र की सेवा वे ही करते हैं जो नास्तिक अत्याचारी, पापी और कामी हैं। इस यज्ञ में उसका प्रवेश निषेध '' - इन बातों को सुनकर नंदि



आग बबूला हुआ। वह शिव की महिमा की स्तुति करने लगा तो दक्ष ने उसे भी शाप दिया। ब्रह्मा ने दक्ष को शाँत किया। वहाँ से शिव पर क्रोध बरसाकर दक्ष महा-यज्ञ करने गया। दक्ष-यज्ञ की कथा बहुत प्रचलित है जिससे हमें दाक्षायणी का स्मरण होता है।

दक्ष के क्रोध के कारण विविध कथाओं में भिन्न-भिन्न हैं। नन्नेचोड नामक तेलुगु कवि ने अपने काव्य 'कुमारसंभव' में इसका विवरण पारिवारिक परिवेश में दिया है जो इस प्रकार है। एक बार दक्ष अपनी पुत्रिकाओं को देखने निकला। पहले कश्यप के पास गया जहाँ उसका बहुत आदर-सत्कार किया गया। सब का कुशल समाचार जानने के बाद वह कैलास गया। वहाँ शिव अपने पुत्र विनायक को दुलारते हुए सतीदेवी के साथ आमोद से विहार करता था। उसने अपने स्वसुर का सत्कार नहीं किया। इस प्रकार प्रथम जामाता शिव से अपमानित होने से दक्ष का क्रोध बढ गया। वह घर जाकर अपने पत्नी से अपनी दुहाई सुनाता है तो पत्नी ने कहा ''जब कन्या का दान किया है तब वह (कन्या) हमारी नहीं है। इतनी तुनक जाने की क्या आवश्यकता है। चुप रहना उचित है।'' लेकिन दक्ष शाँत नहीं हो सका। शिव का अपमान करने के लिए बडे यज्ञ का प्रयत्न करने लगा। इस यज्ञ का इतिवृत्त जानपद साहित्य में इतना प्राचुर्य पा चुका है कि इस से सतीदेवी की महिमा का यशोगान हुआ है और उस नारी-रत्न के व्यक्तित्व की छाप जनता पर पडी है।

एक दिन जब शिव तपोमग्न था तब दक्ष अपने यज्ञ में प्रथम पुत्री सतीदेवी और जामाता का आह्वान करने कैलास गया था। शिव के सामने जाकर प्रणाम किया। तप में मग्न शिव को अपने आसपास

का ध्यान नहीं था। दक्ष के आने की बात न समझने में शिव का कोई दोष नहीं था। वह सीधे सतीदेवी के पास गया। पिता को देखते ही वह अपने आसन से उठ खडी हुई और कांपते हुए पिता के पाद धोकक खडी हो गयी। दक्ष ने जामाता के प्रति अपने सारा क्रोध उस पर बरसाया और रुख बदलकर तीव्र स्वर से बोला - ''आज से मैं सोचूँगा कि तुम नहीं के बराबर हो। हम दोनों में टस से मस न बनेगा '' ऐसा कहकर वह शीघ्र वहाँ से चला गया। सतीदेवी को उसे सांतवना देने का समय भी नहीं मिला।

घर जाते ही दक्ष यज्ञ के प्रयत्न भारी भरकम से करने लगा। उस का क्रोध उतर जाने के बाद पत्नी ने पूछा - ''आप कैलास गए थे न? शिव क्या तप में मग्न था? सतीदेवी क्या बोली'' - दक्ष ने सब बताया। दक्ष की पत्नी को भी एक ओर दुख हुआ दूसरी ओर अपनी पुत्री पर क्रोध आया। दक्ष ने छीत्कार किया और कहा - ''वह पुत्री नहीं है समझो-यदि वह आये तो भी तुम कोई भी उसका गौरव न करना न बुलाना - ''ऐसी आज्ञा दक्ष ने दी शिव से ईर्षा करके दक्ष अपना यज्ञ प्रारंभ करने लगा।

## दक्षयज्ञ

सतीदेवी के जीवन में दक्ष-यज्ञ एक प्रमुख घटना है। यह उसके जीवन की कसौटी है। जो अपने पति का आत्मगौरव अत्यंत प्रधान मानती है उस पतिव्रता के लिए दक्ष-यज्ञ की क्या आदर्शवान है। दक्ष ने यज्ञ का प्रारंभ करके देव-गण ऋषियों का आह्वान किया। अगस्त्य, कश्यप, अत्रि, दधीचि, व्यास, भारद्वाज, गौतम, वैशंपायन आदि पधारे थे। दक्ष की सब पुत्रिकाएँ अपने पतियों व संतान सहित आई थीं। सत्यलोक से ब्रह्म की प्रार्थना करके दक्ष उसे भी यज्ञ में बुला



लाया था। विष्णु भी दक्ष की बिनती मानकर आया था। देवशिल्पि त्वष्ट्रब्रह्म ने उन सब के लिए मूल्यवान सुंदर भवनों का निर्माण किया था। यज्ञ में आए हुए अतिथियों के लिए आवास-गृह दिए गए। भृगुमुनि आदि तपोनिधि ऋत्विक हुए। विष्णु यज्ञ का सर्वाध्यक्ष रहा। दिक्पालक यज्ञ-शाला के द्वारपालक नियुक्त किए गए।

दधीचि महामुनि शिव की अप्रस्तुति से खिन्न होकर सब से उच्च स्वर में बोला - ''हे देवगणों-मेरी बात सुनिए। शंकर इस महायज्ञ में भाग लेने क्यों नहीं आए? महान् देवगण और मुनिगण पधारे हैं। परंतु शिव के नहीं आने से यज्ञ की महत्ता भी नहीं होती''- इन बातों को सुनकर दक्ष आपे से बाहर हो गया और बोला - ''उस रुद्र का विवाह ब्रह्मा की बात मानकर मेरी पुत्री से किया था। नहीं तो मैं अपनी पुत्री को देता ही नहीं'' -

दधीचि यह कहते हुए अपने आश्रम चला गया कि शिव के बिना यह कोई यज्ञ ही नहीं है।

## दाक्षायणी की इच्छा

ग्राम्य-साहित्य में यह प्रस्तावना है कि दक्ष ने शिव का आह्वान करने के लिए अपनी पुत्री के घर आया था। परंतु अन्य कथाओं के अनुसार दक्ष ने शिव का आह्वान नहीं किया। दाक्षायणी को अपने पिता के यज्ञ करने की बात तक न मालूम थी। एक दिन वह अपनी सखियों के साथ गन्धमादन पर्वत पर धारागृह नामक जल-विहार गृह में जलक्रीडा करती थी। उस समय उसने चन्द्र को शीघ्र कदमों से कहीं जाते देखा। उसके पास अपनी सखी को भेजकर समाचार जान लिया।

सतीदेवी अपनी सखी की बातें सुनकर चकित हो गयी। वह सोचने लगी कि दक्ष मेरे पिता हैं और पतिभक्तपरायणी वीरणि मेरी माता है मैं उनकी प्रिय-पुत्री हूँ। मेरे माता-पिता ने यज्ञ में मुझे क्यों नहीं बुलाया। यह विषय शंकर से ही पूछ लूँगी'' -

शिव भरी सभा में महावीर, श्रेष्ठ-योध नंदि आदि के साथ विराजमान था। सतीदेवी सीधे वहाँ गयी। शिव प्रेम से उसे अपनी जांघ पर बिठाकर पूछा- ''हे सती अकस्मात् तुम क्यों इस सभा मध्य आई? कोई विशेष समाचार है क्या? बोलो न'' - सतीदेवी ने कहा - ''हे देव, मेरा पिता बहुत बडा यज्ञ करता है जिस में देवगण और मुनिगण सब गए हैं। आप क्यों नहीं गए? इसका क्या कारण है। पर्व दिनों में बंधुजनों का मिलजुलकर रहना हमारी रिवाज है। हे शंकर तुम मेरे साथ यज्ञ में आओ। मेरी प्रार्थना स्वीकारिए'' शिव दक्ष के पूर्व-यज्ञ में उसके परुष वर्तन से व्याकुल था। अतः बोला कि ''देवी, तुम्हारा पिता मुझ से द्वेष करता है। वह घमंडी है। उसके यज्ञ में जानेवाले भी मूर्ख हैं। बिना आह्वान के जो जाता है उसे इन्द्र के जैसे अपमान सहनना पडता है। इसलिए हे प्रिये हम दोनों को भी नहीं जाना है। मूर्ख बंधुजनों से जो द्वेष पूर्ण बातें सुनते हैं उन से शतृ-बाण से भी अधिक पीडा होती है।''

## सतीदेवी ने हठ किया

शिव की इन बातों पर सतीदेवी ने कान नहीं दिया। वह कहने लगी - ''हे शंकर आप परमेश्वर हैं। आप यज्ञ-फल प्रदाता हैं। ऐसे महादेव का मेरे पिता ने आह्वान नही किया। इस कारण दुराचारी उसके यज्ञ का फल नहीं मिलेगा। कुछ भी हो मैं यज्ञशाला में जाकर

यह जानना चाहती हूँ कि देवगण क्या सोचते हैं। हे स्वामी, मुझे वहाँ जाने की आज्ञा दीजिए।'' शिव वहाँ घटनेवाले विषयों को अपनी दिव्यदृष्टि से देखकर बोला - ''देवी तुम अवश्य जाना चाहती हो तो जाओ। राजा के योग्य अलंकारों से नंदि को वाहन बनाकर चलो।'' पति की अनुमति लेकर वह यज्ञ-शाला गयी। शिव ने राज-योग्य छत्र-चामर रत्न पीताम्बर आदि देकर भेजा। उसके साथ शिव ने साठ हजार रुद्र-गणों को भी भेजा। परमेश्वर ने दाक्षायणी की इच्छा पूरी की। स्कान्द-पुराण में भी दाक्षायणी की कथा इसी प्रकार की है। परंतु नन्नेचोड के अपने काव्य में कथा-क्रम के अनुसार दक्ष शिव से द्वेष करने से यज्ञ में उनका आह्वान नहीं किया। 'कुमारसंभव' काव्य में दक्ष ने सतीदेवी का आह्वान करने की प्रस्तावना है। इस काव्य के अनुसार दक्ष ने सतीदेवी को अपना आडम्बर दिखाने के लिए कुछ स्त्रियों को सतीदेवी को लाने के लिए कैलास भेजा था।

जानपद साहित्य के गीतों में कथा-क्रम के अनुसार सतीदेवी शिव से कहती है कि मेरे पिता हम दोनों का आह्वान करने के लिए आया था; पर आप तपोमग्न थे। उन्हें नहीं देख सके। फिर भी शिव जाने को तैयार नहीं हुआ। सतीदेवी अकेली निकली।

## दक्ष की यज्ञशाला में दाक्षायणी

सतीदेवी नंदि से उतरकर यज्ञ-शाला के अंदर गयी जहाँ देव-दानव महर्षि-गण आदि प्रस्तुत थे। सती को देखकर उसकी माता और बहनें प्रेम से उसे अंदर ले गयी। पर दक्ष ने बात तक नहीं की। दक्ष के भय से तथा शिव प्रेरित माया से अन्य कोई भी सतीदेवी से बात नहीं कर सके न उसका सत्कार कर सके।

सतीदेवी ने अपने माता-पिता को नमस्कार किया। उसने देखा कि यज्ञ में इन्द्र आदि देवताओं के लिए हविर्भाग देने का प्रबंध किया गया था। परंतु शिव के लिए स्थान नहीं दिया गया था। इस से उस देवी ने दक्ष की ओर ऐसा क्रोध से देखा मानों उस क्रोधाग्नि में वह भस्म हो जाय। वहाँ के सब अतिथियों को तिरस्कार की भावना से देखते हुए वह बोली- ''हे दक्ष, शंकर परम मंगल स्वरूप का है। उसके कारण सारी जगत कल्याणमय हो जाती है। ऐसे शंकर का तुमने यज्ञ में क्यों आह्वानित नहीं किया? शंकर यज्ञ का स्वरूप तथा फल प्रदाता है और यज्ञ का स्वामी भी वही है। शिव के बिना यज्ञ क्या है? शिव के स्मरण मात्र से सब कार्य शुभदायक होते हैं और उसके विस्मरण से अशुभ होता है। द्रव्य, मन्त्र,हव्य, कव्य आदि यज्ञ के सब अंग परमेश्वर के रूप हैं। ऐसे शिव को छोडकर तुम ने यज्ञ का प्रारंभ कैसे किया है? तुम शिव को साधारण देव मानते हो तो



तुम्हारी बुद्धि अत्यल्प है; तुम्हारा उद्यम हेय है''- इस प्रकार दाक्षायणी ने वहाँ के सब की निंदा की और फिर एक-एक का नाम लेकर निंदा की। उसकी निंदा के पात्र विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, देव-गण और मुनि गण सब हुए। उसकी निंदा सुनकर सब के सब चुप बैठ गए। लेकिन दक्ष के क्रोध की सीमा नहीं थी। वह बोला -''हे सती तुम बात मत बढाओ। इधर से चले जाना अच्छा है। मैने तुम्हारा आह्वान नहीं किया है। तुम क्यों आयी हो? तुम्हारा पति अमंगलदायी है; पर लोग उसे 'शिव' कहते है। उसकी कोई जाति-पांति नहीं है। वह तो भूत-प्रेतों का अधिपति है'' दक्ष इन बातों से भी असहनीय कटु-वचन बोलने लगा कि मैं ब्रह्मा की बात सुनकर धोखे में आया। उस मूर्ख अज्ञानी, दुरहंकारी और घमंडी रुद्र से मैने तुम्हारा विवाह किया। तुम अपना क्रोध छोड दो। यज्ञ में जो आई हो अपनी बस में रहो''

## सतीदेवी की आत्माहुति

सतीदेवी ने दक्ष की निंदा की और ईंठ का जवाब पत्थर से दिया। वह चिंता करने लगी वापस कैसे जाय और शिव के पूछने से क्या जवाब देना है? अंत में खिन्न होकर दक्ष से बोली - ''हे दक्ष जो महादेव की निंदा करता है और जो उस निंदा को सुनते हैं वे सूर्य-चन्द्र के रहने तक नरक में पडे रहेंगे। इसलिए मैने शिव की निंदा जो सुनी है, उसके परिहार के रूप में अब मैं अपने शरीर का त्याग करूँगी। मैं अग्नि में प्रवेश करती हूँ। मेरे पति की निंदा सुनकर मेरा जीना व्यर्थ है। शंकर की निंदा करनेवाले की जीभ का च्छेद हो जाय। तब जाकर शंकर की निंदा सुनने का पाप कट जायेगा''– इस

प्रकार अपनी प्रतिज्ञा के बारे में कहकर अपने आते समय शिव की कही हुई बातों का स्मरण किया। वह फिर बोली - ''तुम्हारा छीत्कार करना व्यर्थ है। तुम जैसे दुराचारी से जन्मा हुआ मेरा यह शरीर मेरे लिए तिरस्कारित है। यादि शिव कभी मुझे दाक्षायणी नाम से पुकारें तो तुम जैसे मूर्ख की मैं पुत्री हूँ - इसका स्मरण आने से मैं दुखी हो जाँऊगी। इसलिए इस अपवित्र शरीर का त्याग करती हूँ'' - इस प्रकार कहने के बाद सती ने अपने पति का हार्दिक ध्यान किया। यज्ञशाला की उत्तरी दिशा में आसन जमाकर बैठ गयी। जल का आचमन करके निर्मल होकर योग समाधि में आँखें बंद करके बैठ गयी। अपनी इच्छा  से योगाग्नि में अपना शरीर दहन कर भस्म कर दिया।

शिवपुराण की कथा के अनुसार सती ने योगाग्नि से अपने शरीर का दहन किया। अन्य कथाओं के अनुसार उसने यज्ञ-कुण्ड में कूदकर प्राणाहुति दी और यज्ञ का ध्वंस किया था। स्कान्द-पुराण की कथा के अनुसार सती दक्ष से अपमानित होकर ''शिव शिव'' जपती हुई अग्निकुण्ड में कूद पडी। उसके साथ आए हुए साठ हजार शिव के किंकर भी वहीं नाश हो गए। नारद महर्षि कैलास जाकर शिव को सारा विषय बता देता है।

साधारण जनता में प्रचलित गीतों के अनुसार दक्ष और सतीदेवी के मध्य का संभाषण वैसा ही चलता है जैसे साधारण परिवारों में ऐसे संदर्भों में चलता है। अंत में दक्ष की भर्सना करके वह अपने आप को कोसती है कि पति की बात नहीं मानने का फल भोगती हूँ। ऐसे दुरहंकार की पुत्री होने की अपेक्षा किसी अरण्य में



पेड का जन्म लेना कहीं बेहतर है। ऐसा सोचकर उसने आत्मत्याग कर लिया।

## दक्ष यज्ञ का ध्वंस

शिव को जब सतीदेवी के आत्मत्याग की बात मालूम हुई तब उसने उग्र रूप धारण कर अपनी जटा-जूट को पर्वत पर पटक डाला। जटा के दो भाग हो गए । एक भाग से महान योद्धा वीरभद्र का उद्भव हुआ और द्वितीय भाग से भयंकर काया से महाकाली का उद्भव हुआ। शिव ने वीरभद्र को दक्ष यज्ञ का नाश करने की आज्ञा दी। यज्ञ की रक्षा के लिए वहाँ बहुत प्रयत्न किए गए। लेकिन वीरभद्र ने यज्ञ का ध्वंस करके दक्ष का सिर काटकर उसी आग में डाल दिया। ब्रह्म विष्णु आदि देव-गण ने परमेश्वर के पास जाकर प्रार्थना की। शिव ने प्रसन्न होकर दक्ष के शरीर पर भेडी का सिर लगवाया।

तेलुगु काव्य 'कुमारसंभव' की कथा के अनुसार यज्ञ का ध्वंस करने विघ्नेश्वर गया था। वह सती देवी का पुत्र माना जाता है। उसने अपनी माता के अपमान की प्रतिचर्या लेने और दक्ष के मद को चूर-चूर करने का कार्य अपने ऊपर लिया जो न्याय संगत है। इस कथा में दक्ष का वध करने के बदले इतना अपमान किया  कि उसे मार-पीटकर हाथ-पैर बांध दिए; कोई शिकारी वन्यमृग को 'कावडी' से जैसे बाधता है वैसे बाँधकर शिव के पास ले गए। दक्ष की पत्नी ने पति-भिक्षा की प्रार्थना की। शिव ने उसको अपमानित होना ही उस के लिए दण्ड मानकर उसे छोड दिया। कुछ भी हो सतीदेवी के प्राण-त्याग से शिव को एकाकी हो गया।

## दाक्षायणी का आदर्श

दाक्षायणी की कथा पति-भक्त परायणियों के लिए आदर्श है । उसने जन्मांतरों में भी शिव को अपने पति के रूप में पाने का दृढ संकल्प किया। दक्ष-यज्ञ में प्राण-त्याग के बाद पर्वत-राज की पुत्री पार्वती के नाम से महेश्वर को पति रूप में पुनः पाया। आदर्श-प्रेम के लिए सतीदेवी अथवा दाक्षायणी का जीवन सदा के लिए श्रेष्ठ आदर्श रहेगा